2018-2020

S-2

D.El.Ed - 2nd year

इकाई - I

Date:- 11.05.2020

* गणित शिक्षण की प्रक्रियाएं एवं संसाधन

Topic:- गणित शिक्षण और रचनावाद

Ans:- सीखने का यह नजरिया जो सीखने वाली को सीखने की प्रक्रिया मे एक सक्रियकर्ता मानता है रचनावादी मॉडल कहलाता है। इसमे बच्चे अपने आसपास की दुनिया और लोगो के साथ सम्पर्क बना कर अपनी समझ का निर्माण करते है। इसमे बच्चे विभिन्न पहलुओ पर सोचने को प्रेरित होते है। कुछ न कुछ सीखना जारी रहता है, वह व्यर्थ नही जाता है, वह चाहे प्रमेय हो या पैटर्न की पड़ताल करता हो।

1920 ई० के लगभग पियाजे ने यह समझ बनाई कि बच्चो द्वारा की गयी गलतियाँ हमे बताती है कि वे कैसे सोचते है और वो गलतियाँ उनकी गणितीय सोच मे झांकने का एक उम्दा झरोखा है। उदाहरण के लिए यदि बच्चे जोड़ना सीख रहे है तो हम उनके सामने कुछ बीजो की छोटी-छोटी ढेरिया रख देते है और उनसे पूछते है कि इन ढेरियो मे कुल कितनी चीजे है? तो वे सभी ढेरियो की बीजो को गिनकर जोड़ेगे और इसी गतिविधि को हम अलग-अलग चीजो की ढेरियो को मिलाकर दोहरा सकते है। इस तरह वे अपनी जोड़ की समझ बनाते है। इस प्रकार शिक्षण के रचनावादी मॉडल मे सीखने और सिखाने की प्रक्रिया केवल पाठ्यपुस्तक पर निर्भर न रह कर, बच्चो को खुद करने के मौके मिलते है जिससे वे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं कर सके, पाठ्यपुस्तक तो सिर्फ माध्यम है। इसमे शिक्षक की भूमिका ज्ञाता के रूप मे नही अपितु मार्गदर्शक की होती है जो खोजबीन की भावना को प्रोत्साहित करते है।

यह जानने के लिए कि बच्चे को गिनती के संरक्षण की समझ है या नही, आम-तौर पर निम्नलिखित प्रयोग किया जाता है:-

पहले बच्चे को बराबर लम्बाई की दो पंक्तियो मे रखे बटन दिखाये जाते है, जहाँ दोनो लाइनो में एक जितने ही बटन है। बच्चे के सामने ही एक लाइन के बटन फैला कर रख दिये जाते है। दूसरी लाईन को वैसे ही छोड़ दिया जाए तब बच्चो से पूछा जाता है कि दोनो लाइनो मे रखे बटन गिनती मे बराबर है या नही।

(क)

(ख)

P.T.O

Scanned with CamScanner